सुविधायें दे तथा उनके हितों की रक्षा करें। उन दिनों नौकर-पेशा लोग कर्मचारी संघों के सदस्य होते थे उन्हें आर्थिक सहयोग देते थे और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने हितों के लिये ब्रिटिश हुकूमत से संघर्ष करते थे। इसका नतीजा यह हुआ था कि कर्मचारी संघों के संचालकों का महत्व बहुत बढ़ गया था। इसीलिये ब्रिटिश हुकूमत को उनकी सुननी पड़ती थी।

लेकिन जब देश आजाद हो गया तो मजदूरों के हितों की रक्षा स्वयं सरकार करने लगी इसलिये मजदूरों ने कर्मचारी संघों को सदस्यता शुल्क तथा चंदा देना भी बंद कर दिया। यद्यपि अब भी अपनी नीतियों में बदलाव करके राष्ट्रीय और राज्य स्तरों कर्मचारी संघ काम करते रहे और बीच-बीच में हड़तालें करके कर्मचारी सरकारों को अपने इशारों पर नचाते रहे और उनसे अपने हितों और लाभों के अनुकूल फैसले करवाते रहे।

परन्तु 1991 में नई आर्थिक नीतियां लागू होने के बाद नौकरी पेशा वर्ग सीधे-सीधे दवाब में आ गया। अब न सरकार उनके साथ खड़ी थी न निजी कम्पनियों के मालिक व प्रबंधक। कर्मचारियों संघ धीरे-धीरे अपना प्रभाव खो चुके थे और अब उनका दखल बहुत कम हो गया था।

21वीं सदी में आते-आते भारत में नई औद्योगिक इकाइयां जन्म ले चुकी हैं, नये निकाय अपनी शर्तों पर काम कर रहे हैं और अब कर्मचारी संघों का कोई मतलब नहीं रह गया। अब यदि बचे-खुचे कर्मचारी संघ जो अपनी अंतिम सांसे गिन रहे हैं यदि वे अब भी जिन्दा रहना चाहते हैं तो वे एक काम कर सकते हैं। इस समय असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूर और कर्मचारी बड़े संकट में हैं, कर्मचारी संघ उन्हें अपने विश्वास में लेकर उन्हें अपना सदस्य बनाकर उनके हितों के लिये नये-नये मालिकों से संपर्क कर सकते हैं। लेकिन इसके लिये उन्हें अपने काम करने का तरीका बदलना होगा। असंगठित क्षेत्र में काम करने के इच्छुक लोगों को इस तरह प्रशिक्षित करना होगा कि उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हो जाय और उन्हें अपने कामों के अनुरूप सही वेतन-मान और सुविधायें मिलें।

बोध प्रश्न 3

नोट :1) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

2) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

i) दो ऐसे घटकों के नाम बताइए जिन्होंने भारत में औद्योगिकरण के लिए रास्ता बनाया। केवल तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) उन चार क्षेत्रों के नाम जिनमें सबसे पहले औद्योगीकरण हुआ। केवल तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) उन दो घटकों के नाम बताइये जिन्होंने भारत में व्यवसायी वर्ग या व्यावसायिक वर्ग को जन्म दिया।

.....

.....

.....

.....

.....

iv) भारत में छोटे व्यापारियों और दुकानदारों के वर्ग का उदय किस प्रकार हुआ? केवल तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.7 सारांश

आधुनिक भारत में सामाजिक वर्ग विशेष स्थान रखते हैं। हर युग में सामाजिक वर्गों का अस्तित्व रहा है। आज जो वर्ग हम भारतीय समाज में देख रहे उन सबकी जड़े ब्रिटिश शासन काल से जुड़ी हैं।

इसीलिए हमने ब्रिटिश शासन काल के भारत में सामाजिक वर्गों की संरचना पर पड़ने वाले प्रभावों का हमने विश्लेषण किया है। इस संदर्भ में हमने ब्रिटिश शासन काल में नई अर्थ व्यवस्था के उदय की बात उठाई है। इसका प्रभाव भारत की कृषि व्यवस्था पर पड़ा। ब्रिटिश शासन काल में किये गये भूमि सुधारों ने कृषि भूमि निजी सम्पत्ति की स्थिति में पहुंचा दिया, इससे नये प्रकार की कर-व्यवस्था कृषि मामलों में पैदा हुई और समय के साथ-साथ परिवर्तित होते-होते आजादी के बाद कृषि भूमि का व्यवसायीकरण हो गया।

अंग्रेजी शासन काल में भारतीय अर्थव्यवस्था में परिवर्तन करने का दूसरा परिणाम यह हुआ कि भारत में व्यापार तथा वाणिज्य को बढ़ावा मिला, रेलवे का विस्तार हुआ तथा उसके फलस्वरूप औद्योगिक संस्थानों का विकास हुआ। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का लागू होना एक अन्य सामाजिक बल था जिसने भारत ने नये वर्ग को आकार दिया।

इसी संदर्भ में भारत के सामाजिक वर्गों की बीच असमानता की स्थिति को रेखांकित किया है। भारत के विभिन्न भागों व समुदायों में वर्गीय असमानता देखने को मिलती है।

इसके साथ ही हमने भारत में ग्रामीण अंचलों के वर्गों का अध्ययन किया। हमने इन अंचलों में उत्पन्न हुये वर्गों को पांच भागों में बांटा। भूस्वामी (जमींदार), किसान, जोतदार (या किराये पर जमीन लेकर उसमें फसलें उगाने वाले, कृषि मजदूर तथा हाथ के कारीगर। हर वर्ग के उदय के संदर्भ के बारे में बताया गया तथा उसकी चरित्र की व्याख्या की गई।

आजादी के बाद उनके स्वरूप तथा प्रकृति में जो बदलाव आये उन्हें भी रेखांकित किया गया। इसी प्रकार शहरी वर्गों को भी पांच श्रेणियों में बांटा गया। ये पांच श्रेणियां हैं - वाणिज्यिक तथा औद्योगिक वर्ग, निगमित क्षेत्र, व्यावसायिक वर्ग, छोटे व्यापारी - दुकानदार तथा असंगठित श्रमिक तथा नौकर पेशा वर्ग। इनमें से प्रत्येक वर्ग के उदय के संदर्भों को उजागर किया गया तथा उनके चरित्रों की व्याख्या की गई तथा आजादी के बाद स्वतंत्र भारत में उनके कैसे-कैसे बदलाव आये, इस पर प्रकाश डाला गया।

5.8 संदर्भ

बैटली ए, 1974, स्टडीज़ इन इंडिया – एग्रियत सोशल स्ट्रक्चर ओयूपी दिल्ली, चैप्टर III

देसाई ए आर, 1987, सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनेलिज़्म, पॉपुलर प्रकाशन, मुम्बई, चैप्टर III-XI

मिश्रा बी बी, 1978, द इंडियन मिडिल क्लास, ओयूपी दिल्ली इंट्रोडक्शन एण्ड पार्ट II

पाठक अविजीत, 1998, इंडियन मॉडर्निटी : कंट्राडिक्शन्स, पेराडॉक्सेज़ एण्ड पॉसिबिलिटीज़, ज्ञान, नई दिल्ली

सेन सुनील, 1979, एग्रेरियन रिलेक्शन्स इन इंडिया, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, चैप्टर्स III & II

सिंह योगेंद्र, 1977, मॉड्रनाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडीशन, थाम्सन प्रैस, फरीदाबाद - चैप्टर V

सिंह योगेन्द्र, 1988, सोशल स्ट्रेटिफिकेशन एण्ड चेंग इन इंडिया मनोहर, दिल्ली, पृष्ठ : 1- 90

सिंह योगेन्द्र, 2000, कल्चर चेंज इन इंडिया : आइडोंटिटी एण्ड ग्लोबलाइजेशन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) सामाजिक वर्ग एक प्रकार का सामाजिक समूह ही है जिसे न तो कानूनी तौर पर व्याख्यायित किया गया है, न ही उसे धार्मिक मान्यता मिली है। यह एक तरह के उन लोगों का समूह होता है जो समाज में एक जैसी हैसियत रखते हैं। इस समूह के लोग आपस में एक दूसरे से खुले होते हैं, जो भी इनके जैसी जीवन शैली में जीना पसंद करता है तथा वैसी ही वित्तीय हैसियत रखता है, वह इस वर्ग में शामिल हो सकता है। एक समाज में सामाजिक वर्ग की पहचान उसके आर्थिक स्तर तथा आमदनी के संसाधनों के आधार पर की जाती है। औद्योगिक समाजों में वर्गों का उदय होना स्वाभाविक है।

ii) भारत में सामाजिक वर्गों के उदय के लिए जो कारण जिम्मेदार हैं उनमें से कुछ कारण हैं – अ) भूमि – व्यवस्था में लाये गये परिवर्तन, ब) व्यापार एवं वाणिज्य, स) औद्योगीकरण, द) राज्य व प्रशासनिक प्रणाली, य) आधुनिक शिक्षा।

iii) वे दो क्षेत्र जिनमें सामाजिक वर्गों का असमान विकास हुआ वे इस प्रकार हैं - एक है भारत के भौगोलिक विविधता वाले क्षेत्र और दूसरा है - भारत के विभिन्न समुदायों वाले क्षेत्र।

बोध प्रश्न 2

i) रैयतबाड़ी बन्दोवस्त ब्रिटिश हुकूमत द्वारा लागू किया गया एक भूमि व्यवस्था कानून था। इस बन्दोवस्त के अनुसार कृषि भूमि का दायित्व उन्हीं किसानों को दे दिया गया जो उस पर खेती करते थे।

ii) स्थायी बन्दोवस्त नामक भूमि सुधार कानून ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में लागू किया था। इस कानून के अनुसार जमीनों के मालिकाना हक जमीदारों को दे दिये गये और यह शर्त रखी गई कि इसके बदले जमीदार अपने अधीन जमीन पर ब्रिटिश सरकार को कर देंगे।

iii) संपन्न किसान वे होते हैं जिनके अधीन बहुत जमीन होती है। वे स्वयं खेतों में हल नहीं चलाते बल्कि वे कृषि मजदूरों को अपनी जमीन पर खेती करने के लिये नौकरी पर रखते हैं। वे केवल उनके काम की देखरेख करते हैं। वे कृषि भूमि के विकास तथा उससे अधिक से अधिक फसल लेने के लिये भूमि का प्रबंधन करते हैं और अच्छी फसल प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर मध्यमवर्गीय किसानों के पास थोड़ी जमीन होती है वे उस जमीन पर स्वयं खेती करते है और उनके परिवार के सदस्य भी खेती के काम में उनका हाथ बंटाते हैं।

बोध प्रश्न 3

i) वे दो घटक जो भारत में औद्योगिकरण के लिये जिम्मेदार थे, वे हैं रेलवे लाइनों का बिछाया जाना तथा पूंजी अर्जित करना।

ii) वे चार क्षेत्र जिनमें सबसे पहले औद्योगिकरण हुआ हैं - अ) बागान, ब) कपास, स) जूट, द) खदान।

iii) वे घटक जिनकी वजह से भारत में व्यावसायिक वर्गों का उदय हुआ है - अ) व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग, ब) राज्य एवं प्रशासनिक प्रणाली।

iv) शहरों और महानगरों का बड़े पैमाने पर विकास और विस्तार हुआ तो भारत में छोटे व्यापारी और दुकानदारों के वर्ग का उदय हुआ।

अन्य संदर्भ

'ट्राइव एण्ड कास्ट इन इण्डिया' इन कांस्टीट्यूशन टू इण्डियन सोसायटी वोल्यूम नं. 5, पेज नं. 7-19, एफ. जी. बेली, 1961।

द सैड्यूल्ड ट्राइब्स, पॉपुलर प्रकाशान प्राइवेट लिमिटेड मुम्बई – जी. एस. हुरी, 1963।

कास्ट इन मॉडर्न इण्डिया एण्ड अदर ऐसेज, मीडिया प्रकाशन मुम्बई – एम. एन. श्रीनिवास, 1962।

रिलीजन एण्ड सोसायटी अमंगद कूर्गस ऑफ साउथ इण्डिया मीडिया प्रमोट से एण्ड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड मुम्बई - एम. एन. श्रीनिवास : 1952।

स्टडीज़ इन इण्डिया एग्रियनसोशल स्ट्रक्चर ओ. यू. पी. दिल्ली चैप्टर III ए. बेटिली, 1974।

सोशल बैकग्राउण्ड ऑफ इण्डियन नेशनेलिज्म, पॉपुलर प्रकाशन मुम्बई चैप्टर्स III-XI - ए. आर. देसाई।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY